Homes
पिता, दादा, परदादा, नाना परनाना, वृद्ध परनाना
बाबा परबाबा
का पार्वण श्राद्ध होता है उसमें भी समय के अनुसार

।। श्राद्ध सामग्री ।।

१ पाव चावल खीर पकाने के लिए
अथवा १। पाव जवा का आटा
सफेद माला फूल-तुलसीपत्र
१५ पान १५ सुपारी
सरसों या तिल के तेल का एक दीपक
काली तिल १० ग्राम
जवा १० ग्राम, अक्षत १० ग्राम
शहद १० ग्राम, घी १० ग्राम
चीनी १०० ग्राम
कच्चा दूध २ पाव खीर पकाने तथा पिण्डा पर चढ़ाने हेतु
कच्चा सूत ३ हाथ
जनेऊ २ जोड़ा, फल-५, मिठाई-५
पलाश का पत्ता ५० तिप्ता बनाने हेतु

पलाश की दोनिया-१५
धूपबत्ती, कपूर
रूई बत्ती बनाने हेतु
गंगा जल, गंगा मिट्टी
कुशा मोटक-पैंती-त्रिकुश
पीली सरसों
सफेद चंदन घिसा हुआ

।। पार्वण श्राद्ध पद्धति ।।

- ☐ श्राद्धकर्त्ता आंगन में अथवा श्राद्ध स्थान में शुद्ध वस्त्र धारण कर दक्षिणमुख बैठे।
- ☐ अपने सामने शुद्ध मिट्टी अथवा बालू से १ हाथ लम्बी १ बीता चौड़ी वेदी बना लें।
- ☐ वेदी के दक्षिण पितरों के लिए ६ तिप्ता रखें। ३ पत्ता जोड़ ले इसे ही तिप्ता कहते हैं।
- ☐ तिप्ता के आगे १-१ पत्ता लगा दें (उसे भोजन पात्र कहते हैं)।
- ☐ भोजन पात्र के आगे १-१ दोनिया रख दें।
- ☐ वेदी के पश्चिम २ तिप्ता (विश्वेदेवा के लिए) रखें।
- ☐ इस तिप्ता के आगे भी १-१ पत्ता और १-१ दोनिया रखें।
- ☐ खीर पका लें।

।। श्राद्ध प्रारम्भ ।।

- ☐ दक्षिण की ओर एक सरसों या तिल के तेल का दीपक जला कर रख दें। (दीपक बुझे नहीं प्रबन्ध कर दे)।
- ☐ श्राद्धकर्त्ता श्राद्ध आसन पर पूर्व की ओर मुख कर बैठे।
- ☐ बायें कंधे पर अंगौछा रख ले।
- ☐ कुशा से अपने उपर तथा श्राद्ध सामग्री पर जल छिड़कें।

Home

।। ओम् अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।

□ तीन बार आचमन करें।

।। ओम् केशवाय नमः। ओम् माधवाय नमः। ओम् नारायणाय नमः ।।

□ हाथ धो ले। ।। ओम् हृषीकेशाय नमः ।। पुण्डरीकाक्षः पुनातु ।।

□ दोनों हाथ में पवित्री (पैंत्री) पहने।

।। ओम् पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर वः प्रसव उत् पुनाम्यच् छिद्रेण पवित्रेणसूर्यस्य
रश्मिभिः तस्यते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत् कामः पुने तच्छ्केयम् ।।

□ पीली सरसों या अक्षत बाएँ हाथ में रखकर दाहिने हाथ से ढ़क ले : मन्त्र पढ़े--

।। ओम् नमो नमस्ते गोविन्द पुराण पुरुषोत्तम ।
इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्ष त्वं सर्वतो दिशः ।।

□ सरसों या अक्षत को पूरब-पश्चिम उत्तर-दक्षिण दिशाओं में थोड़ा-थोड़ा छिड़कें।

पूर्व में- प्राच्यै नमः। दक्षिण में- अवाच्यै नमः।
पश्चिम में- प्रतीच्यै नमः। उत्तर में- उदीच्यै नमः।
ऊपर आकाश में- ओम् अन्तरिक्षाय नमः।
शेष सरसों नीचे भूमि पर छोड़ दे- ओम् भूम्यै नमः।

□ सामने भूमि पर तीन बार जल छोड़ दे, चंदन, अक्षत, फूल चढ़ा दें।

□ मन्त्र पढ़ता रहे-।। ओम् भूम्यै नमः। ओम् पृथिव्यै नमः ।।

□ १ कुशा २ दाना तिल १ पान में लपेटकर बाएँ टेंट में (धोती के फेंटा में) खोस ले।

।। ओम् सोमस्य नीवीरसि विष्णोः शर्मासि शर्म।
यजमानस्येन्द्रस्व योनिरसि सुसस्याः कृषी स्कृधि ।।

□ कुश-अक्षत-जल लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करे।

।। ओम् अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अस्मिन् आश्विनमासे कृष्णे पक्षे (अमुक) तिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् मम पितृ-पितामह-प्रपितामहानाम् तथा च मातामह-प्रमातामह-वृद्ध प्रमातामहानाम् सपत्नीकानां एवं च पितृणाम्-अपात्रक पार्वण श्राद्धमहं करिष्ये ।।

□ हाथ का कुश-अक्षत-जल सामने पृथ्वी पर छोड़ दे।

□ हाथ जोड़ कर तीन बार गायत्री अथवा राम-राम जप ले।

।। ओम् देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ।।

□ पश्चिम की ओर मुख करे।

□ अपना संकल्प वाला कुशा तथा १ त्रिकुश (तीन कुशा को एक में मिलाकर बाँध ले) तथा जवा जल लेकर संकल्प करे।

।। अद्य अस्मिन् अपात्रक पार्वणश्राद्धे मम पितृ-पितामह-प्रपितामहानाम्
(पिता-बाबा-परबाबा) श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा इदम् आसनं वो नमः ।।

☐ त्रिकुश तथा जवा-जल सामने विश्वेदेवा के दक्षिण वाले आसन (तिप्ता) पर रख दे।

☐ संकल्प वाला कुशा हाथ में लिए रहे।

☐ फिर १ त्रिकुश-जवा-जल तथा संकल्प वाला कुशा लेकर संकल्प करे।

।। अद्य अपात्रक पार्वणश्राद्धे मम मातामह-प्रमातामह- वृद्ध प्रमातामहानाम्
(नाना-परनाना-वृद्ध परनाना) श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा इदम् आसनं वो नमः ।।

☐ त्रिकुश-जवा-जल दूसरे आसन (तिप्ता) पर रख दे।

☐ संकल्प वाला कुशा सामने पृथ्वी पर रख दे, हाथ में जवा लेकर प्रार्थना करे।

।। ओम् विश्वेदेवा स आगत श्रृणुताम इम ꣳ हवम्। एदं वर्हि र्निषीदत ।।
।। ओम् आगच्छन्तु महाभागाः विश्वे देवा महाबलाः ।।
।। ये अत्र विहिताः श्राद्धे सावधाना भवन्तु ते ।।
।। विश्वेदेवान् अहम् आवाहयिष्ये ।।

☐ हाथ का जवा दोनों आसन पर छोड़ दे।

☐ आसन के सामने रखी १ दोनिया उठा कर बाएँ हाथ में रखे, दोनिया में जल भरे।

।। ओम् शन्नोदेवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्यो रभि स्रवन्तु नः ।।

☐ दोनिया में दो दाना जवा छोड़े।

।। ओम यवोसि यव यास्मद्वेषो यवया रातीः ।।

☐ दोनिया में १ कुशा गांठ लगाकर चुपचाप रख ले। दोनिया में चन्दन-फूल रख ले।

☐ दोनिया में रखा कुशा दाहिने वाले आसन (तिप्ता) के आगे वाले पत्ता (भोजन पात्र) पर रख दे और इस कुशा पर लोटा से जल छिड़क दें।

☐ दोनिया को दाहिने हाथ से बन्द कर ले। ☐ मन्त्र पढ़े:-

।। ओम् या दिव्या आपः पयसा सं वभूवु र्या अन्तरिक्षा उत पार्थिवीर्याः।
हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तान आपः शिवाःस ꣳ स्योना सुहवा भवन्तु ।।

☐ दोनिया को दाहिने हाथ में रख ले, कुशा-जवा-जल लेकर संकल्प करें।

।। अद्य अस्मिन् अपात्रक पार्वण श्राद्धे पितृ-पितामह-प्रपितामहानाम् (पिता-
बाबा-परबाबा) श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एष हस्तार्घः वो नमः ।।

☐ दोनिया का दो बूँद जल भोजन पात्र पर रखे कुशा पर छोड़ दें।

☐ शेष दोनिया का जल-जवा-फूल आसन पर रखे कुशा पर चढ़ा दें।

☐ दोनिया बाएँ हाथ में ले लें। दाहिने हाथ से भोजन पात्र पर रखा कुशा उठाकर दोनिया में रख ले।

☐ दोनिया फिर दाहिने हाथ में लेकर आसन के पीछे सीधी रख दें : मंत्र पढ़े-

।। ओम् विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्थानमसि ।।

☐ फिर दूसरी वाली दोनिया उठाकर बाएँ हाथ में रखे।

☐ गांठ लगा १ कुशा दोनिया में रखे, जल-जवा-चन्दन-फूल दोनिया में रख ले।

☐ जल मंत्र **।। ओम् शन्नोदेवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्यो रभिस्रवन्तु नः ।।**

☐ जवा मंत्र **।। ओम् यवोसि यव यास्मद्वेषो यव या रातीः ।।**

☐ दोनिया से कुशा निकाल कर दूसरे भोजन पात्र पर रख दें ।

☐ लोटा से इस कुशा पर जल छिड़क दे। ☐ दोनिया को दाएँ हाथ से ढ़क ले।

।। ओम् यादिव्या आपः पयसा संबभूवुर्या अन्तरिक्षा उत पार्थिवीर्याः।
हिरण्यवर्णा यज्ञियास् तान् आपः शिवाः स ॅ स्योना सुहवा भवन्तु ।।

☐ दोनिया दाहिने हाथ में ले ले। ☐ कुशा-जवा-जल लेकर संकल्प करे।

।। अद्य अस्मिन् अपात्रक पार्वणश्राद्धे मम मातामह-प्रमातामह-वृध्द प्रमातामहानाम्
(नाना-परनाना-वृध्द परानाना) श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एष हस्तार्घः वो नमः ।।

☐ दोनिया का थोड़ा जल भोजन पात्र पर रखे कुशा पर चढ़ा दे।

☐ शेष जल-जवा-फूल आसन पर रखे कुशा पर चढ़ा दे।

☐ भोजन पात्र पर रखे कुशा को उठाकर दोनिया में रख ले। दोनिया आसन के पीछे सीधी रख दे।

।। ओम् विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्थानमसि ।।

☐ दोनों विश्वेदेवा (आसन पर रखे कुशा) पर चुपचाप चंदन-जवा-फूल-कच्चा सूत-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-दक्षिणा चढ़ाकर पूजन कर दे।

☐ दाहिने हाथ में कुशा जवा जल लेकर संकल्प करे।

।। अद्य अस्मिन् अपात्रक पार्वण श्राद्धे मम पितृ-पितामह-प्रपितामहानाम्
(पिता-बाबा-परबाबा) तथा च मातामह-प्रमातामह-वृध्द प्रमातामहानाम्
(नाना-परनाना-वृध्द परनाना) पार्वण श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एतानि गंध-
पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-ताम्बूल-दक्षिणा (यज्ञोपवीत) वासांसि वो नमः ।।

☐ हाथ का जवा दोनों आसनों पर छिड़क दें। कुशा सामने भूमि पर रख दे।

☐ हाथ में जल लेकर दोनों विश्वेदेवा के आसन के चारों ओर घुमा कर छोड़ दे।

।। ओम् यथा चक्रायुधो विष्णुःत्रैलोक्यं परिरक्षति।
एवं मण्डल तोयन्तु सर्वभूतानि रक्षतु ।।

☐ १ दोनिया में जल भर विश्वेदेवा आसन के दाहिनी ओर रख दे।

☐ १ चम्मच खीर (जिससे पिण्डा देना है) हाथ में लेकर २ बार इसी दोनिया में छोड़ दें।

।। ओम् अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा ।।

।। ओम् सोमाय पितृमते स्वाहा ।।

☐ पिण्डा वाली खीर (आधा चम्मच) दोनों विश्वेदेवा (कुशा) के आगे रखे भोजन पात्र (पत्ता) पर रख दें।

☐ खीर के बगल २ बूँद घी, २ बूँद शहद तथा १ दोनिया में जल रख दे।

नोट- कुछ लोग १ दोनिया में जल तथा १ दोनिया में खीर रखते हैं।

□ दोनो हाथ के अँगूठे में शहद लगाकर-सीधा हाथ (हथेली ऊपर की ओर रहे) विश्वेदेव की ओर करें-मंत्र पढें-

।। ओम् मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।
मधुनक्त मुतोषसो मधुमत् पार्थिव ँ रजः। मधुद्यौ रस्तु नः पिता।
मधुमान्नो वनस्पतिर् मधु मॉं अस्तु सूर्यः। माध्वी र्गावो भवन्तु नः।
ओम् मधु ! मधु ! मधु ।।

□ दोनों हाथ से (बाएँ हाथ पर दाहिना हाथ रखकर) भोजन पात्र (जिस पर घी-खीर जल रखा है) छू लें-मन्त्र पढ़े-(पहले पितावाला फिर नाना परनाना वाला भोजन पात्र छूना चाहिए)

(१) पृथिवी ते पात्रं द्यौ रपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा।
(२) इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा ।।
(३) कृष्ण हव्यमिदं रक्षमदीयम् ।।

□ बाएँ हाथ से भोजन पात्र को स्पर्श किये रहे-दाहिने हाथ के अंगूठे से भोजन पात्र पर रखे घी-खीर-जल को क्रमशः ३-३ बार कुश आसन में छुवा दे--

खीर-	**इदमन्नम् ।**	**इदमन्नम् ।**	**इदमन्नम् ।**
घी-	**इदमाज्यम् ।**	**इदमाज्यम् ।**	**इदमाज्यम् ।**
दोनिया का जल-	**इमा आपः ।**	**इमा आपः ।**	**इमा आपः ।**
फिर खीर-	**इदं हविः ।**	**इदं हविः ।**	**इदं हविः ।**

□ दोनों भोजन पात्र पर ४ दाना जवा छोड़ दे--मन्त्र पढ़े-

।। यवोसि यव यास्म द्वेषो यव या रातीः ।।

□ जवा-कुशा-जल लेकर संकल्प करे।

।। ओम् अद्य मम पितृ-पितामह-प्रपितामहानां तथा च मातामह-प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहानाम् पार्वण श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवाः एतद् अन्नं सोपकरणम् वो नमः ।।

□ हाथ का जवा-जल दोनों विश्वेदेवा पर छिड़क दें।

□ हाथ का कुशा सामने भूमि पर रख दें। हाथ जोड़कर प्रार्थना करे-

।। ओम् अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद् भवेत्।
तत् सर्वमछिद्रमस्तु। विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमो नमः ।।

□ दक्षिण की ओर मुख कर ले □ अपसव्य हो जाय।

□ १ मोटक (संकल्प के लिए) तथा ६ मोटक (आसन के लिए) दाहिने हाथ में ले ले।

□ तिल तथा जल हाथ में लेकर संकल्प करे।

।। अद्य अस्मत् पितृ-पितामह-प्रपितामहानां (पिता-बाबा-परबाबा का नाम ले) तथा च मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहानाम् (नाना-परनाना-वृद्ध परनाना का नाम ले) पार्वण श्राद्धे इमानि आसनानि तेभ्यः स्वधा ।।

नोट- बांये कन्धे पर जनेऊ-अंगौछा रखने को सव्य कहते हैं।
दाहिने कन्धे पर जनेऊ-अंगौछा रखने को अपसव्य कहते हैं।

□ संकल्प का मोटक सामने भूमि पर रख दे। □ बाकी ६ मोटक सामने रखे तिप्ता पर पश्चिम से पूरब के कम से रख दें।

□ हाथ का तिल छहों मोटक पर छिड़क दे। □ तिल लेकर पार्थना करे।

।। ओम् आयन्तु नः पितरः सोम्यासो अग्निष् वात्ताः पथिभिर् देवयानैः।
अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु ते वन् त्वस्मान् ।।
।। ओम् पितृन् आवाहयिष्ये ।।

□ तिल छहों मोटक पर छिड़क दे।

।। ओम् अपहताऽअसुरा रक्षा ꣳ सिवे दिषदः ।।

□ सभी तिप्ता के आगे १-१ दोनिया रखे सब में जल-तिल-चन्दन-फूल-कुशा का १-१ टुकड़ा (गांठ लगाकर) रख दे।

□ जल भरने का मन्त्र।। **ओम् शन्नोदेवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्रवन्तु नः ।।**

□ तिल छोड़ने का मंत्र- **।। ओम् तिलोसि सोम दैवत्यो गोसवो देव निर्मितः।**
प्रत्नमद्भिः प्रत्तः स्वधया पितृ न् लोकान् प्रीणाहि नः स्वाहा।।

□ दोनिया में रखे कुशा के टुकड़ों को तिप्ता के आगे वाले भोजन पात्रों पर रख दे।

□ पूजा जल पात्र से (लोटा से) सभी कुश टुकड़ों पर जल छिड़क दे।

□ दोनों हाथ फैलाकर सभी दोनिया ढ़क ले, मंत्र पढ़े-

।। ओम् या दिव्या आपः पयसा सं बभूवुर्या अन्तरिक्षा उत् पार्थिवीर्याः।
हिरण्यवर्णा यज्ञियास् तान् आपः शिवाः स ꣳ स्योना सुहवा भवन्तु ।।

□ दाहिने हाथ में संकल्प वाला मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करें।

।। अद्य अस्मत् पितृ-पितामह-प्रपितामहानां तथा च मातामह-प्रमातामह-वृद्ध प्रमातामहानां (सब का नाम ले ले) पार्वण श्राद्धे एते हस्तार्घाः तेभ्यः स्वधा ।।

□ हाथ का जल-तिल सभी दोनिया पर छिड़क दे। मोटक सामने भूमि पर रख दे।

□ क्रमशः १-१ दोनिया (पश्चिम की ओर से) उठाकर थोड़ा जल कुशा के टुकड़े पर शेष जल-तिल-फूल तिप्ता पर रखे मोटक पर चढ़ा दे।

□ जल चढ़ाने के बाद कुशा का टुकड़ा उसी दोनिया में रख कर आसन तिप्ता के पीछे रखता जाय।

□ सभी दोनिया का जल चढ़ा लेने के बाद-

□ पिता की दोनिया को बाबा की दोनिया पर तथा इन दोनों दोनिया को परबाबा की दोनिया पर रखकर तीनों दोनिया पिता के तिप्ता के (आसन) के पास दक्षिण की ओर उलट कर रख दे।

□ इसी प्रकार नाना-परनाना-वृद्ध परनाना की दोनिया एक के ऊपर एक रखकर तीनों दोनिया नाना के तिप्ता (आसन) के पास दक्षिण की ओर उलटकर रख दे।

□ दोनिया रखने का मन्त्र- **।। ओम् पितृभ्यः स्थानमसि ।।**

□ सभी मोटक पर कच्चा सूत चढ़ा दे। चन्दन-तिल-फूल-जनेऊ-धूप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी दक्षिणा चढ़ा दे। (पितरों को तर्जनी अंगुली (पहली अंगुली) से चन्दन लगाना चाहिए)।

□ संकल्प का मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करें-

।। अद्य अस्मत् पितृ-पितामह-प्रपितामहानाम् तथा च मातामह-प्रमातामह-वृद्ध प्रमातामहानाम् पार्वणश्राद्धे एतानि गन्ध पुष्प धूप दीप ताम्बूल वासांसि तेभ्य: स्वधा ।।

□ हाथ का जल-तिल छहों मोटक पर छिड़क दे। □ हाथ का मोटक लोटा में रख दे।

□ १ दोनिया में थोड़ा सा जल रखकर दक्षिण की ओर १ कुशा पर यह दोनिया रख दे।

□ थोड़ी सी खीर या जवा का आटा (सना हुआ) तिल-घी के साथ इसी दोनिया में छोड़ दे, मन्त्र पढ़े:-

।। ओम् इदमन्नमेतद् भूस्वामि पितृभ्यो नम: ।।

□ छहों तिप्ता के आगे रखे छहों पत्तों पर (भोजन पात्र) थोड़ी-थोड़ी खीर-घी-शहद-जल रख दे।

□ दोनों हाथों के अंगूठों में जरा सा शहद लगाकर छहों भोजन पात्रों पर हाथ फैला ले-मन्त्र पढ़े-

।। ओम् मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धव:। माध्वीर्न: सन् त्वोषधी:।
मधुनक्त मुतोषसो मधुमत् पार्थिव ँ रज:। मधुद्यौरस्तु न: पिता।
मधुमान्नो वनस्पतिर् मधु माँ अस्तु सूर्य:। माध्वीर् गावो भवन्तु न:।
।। मधु ।। मधु ।। मधु ।।

□ कुछ लोग पिता-पितामह-प्रपितामह-मातामह-प्रमातामह-वृद्ध प्रमातामह को अलग-अलग अर्घ देते हैं। अत: अलग-अलग करने पर अलग-अलग दोनिया में जल भरे, कुशा चन्दन फूल छोड़े, बॉए हाथ में दोनिया रखकर दाहिने हाथ से ढ़ँके, संकल्प करे, जल चढ़ा दोनिया रख ले। जब सब दोनिया का जल चढ़ जाय, तब दोनियों को उठाकर एक में मिलाकर उलट दे।

□ जल-तिल चढ़ाने-ढ़ँकने का मन्त्र एक ही है, केवल संकल्प में नाम-पद अलग-अलग हो जाता है। जैसे-अद्यअ स्मत् पित: (नाम) पार्वण श्राद्धे एष हस्तार्घ: ते स्वधा।। इसी तरह-बाबा आदि का नाम जोड़ ले।

□ दोनों हाथ को उलटा कर हथेली नीचे रहे।(दाहिने हाथ के ऊपर बांया हाथ करके-)

□ भोजन पात्र को छू ले मन्त्र पढ़े-

(१) पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा ।।

(२) इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढ़ मस्य पा ँ सुरे स्वाहा ।।

(३) कृष्ण कव्य मिदं रक्ष मदीयम् ।।

□ बाएँ हाथ से भोजन पात्र स्पर्श किए रहे, दाहिने हाथ के अंगूठे से ३-३ बार खीर, घी, दोनिया का जल फिर खीर छू-छू कर आसन मोटक में लगाए-मन्त्र पढ़े-

खीर-	**इदमन्नम् ।**	**इदमन्नम् ।**	**इदमन्नम् ।**
घी-	**इदमाज्यम् ।**	**इदमाज्यम् ।**	**इदमाज्यम् ।**
जल-	**इमा आप: ।**	**इमा आप: ।**	**इमा आप: ।**
फिर खीर-	**इदं कव्यम् ।**	**इदं कव्यम् ।**	**इदं कव्यम् ।**

□ पढ़ कर हाथ हटा ले। दाहिने हाथ में तिल लेकर भोजन पात्र पर छिड़क दे।

।। अपहताऽसुरा रक्षा ँ सिवेदिषद: ।।

□ मौटक-तिल-जल लेकर संकल्प करे।

।। ओम् अद्य अस्मत् पितृ-पितामह-प्रपितामहानाम् तथा च मातामह-प्रमातामह-वृद्ध प्रमातामहानाम् पार्वण श्राद्धे इदं सोपकरणं तेभ्य: स्वधा ।।

☐ हाथ का तिल-जल सामने छहों मोटकों पर छिड़क दे। ☐ हाथ का मोटक लोटा में छोड़ दें।

☐ हाथ जोड़कर प्रार्थना करे।

।। ओम् अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद् भवेद्।
तत् सर्वमछिद्रमस्तु ।। परिपूर्णमस्तु ।।

☐ सव्य होकर अपना नाक-कान छूले। ☐ अपने पाँव के नीचे १ कुशा रखकर निम्न मन्त्रों का पाठ करे-

☐ ३ बार गायत्री जपे- ☐ पुरुषसूक्त का पाठ करें-

ओम् कृणुष्व पाजः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजे वा मवां इभेन। तृष्वी मनु प्रसितिं द्रूणानोऽस्तासि विध्य रक्षसस् तपिष्ठैः ।। तव भ्रमास आशुया पतन् त्यनु स्पृश धृषता शोशुचानः। तपू ꣳ ष्यग्ने जुह्वा पतंगान सन्दितो विसृजा विष्व गुल्काः ।। प्रति स्पशो विसृज तूर्णि तमो भवा पायुर् विशो अस्या अदब्धः। यो नो दूरे अघ श ꣳ सो यो अन् त्यग्ने मा किष्टे व्य। ,रा दधर्षीत् ।। उदग्ने तिष्ठ प्रत्या तनुष्व न्य मित्रां ओषतात् तिग्म हेते। यो नो अराति ꣳ समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्य तसं न शुष्कम् ।। ऊर्ध्वो भव प्रति विध्या ध्यस्मदा विष् कृणुष्व दैव्या न्यग्ने। अव स्थिरा तनुहि यातु जूनां जामि मजामिं प्रमृणीहि शत्रून् ।। अग्ने ष्ट्वा तेजसा सादयामि ।। ओम् उदीरतामवर उत् परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुं य ईयुर वृका ऋतज्ञास्ते नो ऽवन्तु पितरो हवेषु ।। अंगिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः। तेषां वय ꣳ सुमतौ यज्ञिया ना मपि भद्रे सौमनसे स्याम ।। येनः पूर्वे पितरः सोमयासोऽनू हिरे सोमपीथं बसिष्ठाः। तेभिर्यमः स ꣳ रराणो हवी ꣳ ष्युशन्नुशद्भिः प्रति काममत्तु ।।

।। पुरुषसूक्त पाठ ।।

ओम् सहस्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमि ꣳ सर्वतस् पृत्वा त्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम् ।। १ ।।
पुरुष एवेद ꣳ सर्वम् यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उता मृतत्व स्येशानो यदन्ने नाति रोहति ।। २ ।।
एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पुरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि ।। ३ ।।
त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहा भवत् पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत् सा शना नशने अभि ।। ४ ।।
ततोविराड जायत विराजो अधि पुरुषः। सजातो अत्य रिच्यत पश्चाद् भूमि मथोपुरः ।। ५ ।।
तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये ।। ६ ।।
तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दा ꣳ सि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मा दजायत ।। ७ ।।
तस्मादश्वा अजायन्त से के चो भयादतः। गावोह जज्ञिरे तस्मात् तस्माज् जाता अजावयः ।। ८ ।।
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्चये ।। ९ ।। यत् पुरुषं
व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येत ।। १० ।। ब्राह्मणोऽस्य
मुखमासीत् बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद् वैश्यः पद्भ्या ꣳ शूद्रो अजायत ।। ११ ।। चन्द्रमा
मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो अजायत। श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्नि रजायत ।। १२ ।। नाभ्या
आसीदन्तरिक्ष ꣳ शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात् तथा लोकां अकल्पयन् ।। १३ ।।
यत् पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्वत। वसन्तोऽस्यासी दाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद् धविः ।। १४ ।।

सप्तास्यासन् परिधयस् त्रिः सप्त समिध कृताः। देवा यद् यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ।। १५ ।। यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवास् तानि धर्माणि प्रथमा न्यासन्। तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।। १६ ।। ओम् आशुः शिशानो वृषभो नभीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनो निमिष एकवीरः शत ँ सेना अजयत् साक मिन्द्रः ।।

नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः ।। शंकाराय च मयस्कराय च नमः। शिवाय च शिवतराय च ।। ओम् नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष नमस्तेऽनेक चक्षुषे। नमः पिनाकहस्ताय वज्रहस्तायवैनमः ।। सप्तव्याधा दशार्णेषु मृगाः कालञ्जरे गिरौ। चक्र वाकाः शरद्वीपे हंसाः सरसि मानसे ।। तेऽपिजाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणावेदपारगाः। प्रस्थिता दूरमध्वानं यूयं तेभ्योऽवसीदथ ।। ओम् नमस्तेऽहं पितॄन् स्वर्गे ये वसन्त्यधिदेवताः। देवैरपिहि तृप्यन्तु ये च श्राद्धैः स्वधोत्तरैः ।। ओम् रुची रुची रुचिः ।।

- ☐ खीर या जवा का आटा में तिल-शहद-घी-चीनी मिलाकर पिण्डा बना ले।
- ☐ दक्षिण की ओर एक कुशा रख दे।
- ☐ अपसव्य हो जाय ☐ १ दोनिया में १ पिण्डा-जल-तिल-फूल-चंदन-शहद-घी-दूध आदि रख लें।
- ☐ १ कुशा ले लें।

नोट- शास्त्र के अनुसार १ पिण्डा विकर के लिए तथा ६ पिण्डा पितरों के लिये बनता है। लोकाचार में इधर १७ पिण्डा बनाते हैं। कुछ लोग तीन पीढ़ी के भीतर जिन लोगों को पिण्डा देना होता है उतना पिण्डा बनाते हैं। इस पद्धति में इधर क्षेत्र में प्रचलित १७ पिण्ड का संकल्प लिखा जा रहा है। अतः श्राद्ध कर्त्ता कुल १७ पिण्डा बना ले। १ चम्मच खीर लेप भाग हेतु बचा लें।

- ☐ दोनिया बाएँ हाथ में रखकर दाहिने हाथ से ढ़ँक लें। निम्न मन्त्र पढ़ें :-

।। ओम् अनग्नि दग्धाश्च ये जीवा ये प्रदग्धाः कुले मम।
भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम् ।।

- ☐ उठकर दक्षिण में रखे कुशा पर दोनिया (पिण्डा सहित) उलट कर रख दें।
- ☐ हाथ में पहनी पैंती वहीं उतार दे। ☐ बाहर निकल कर हाँथ-पाँव धो ले।
- ☐ अपने आसन पर आकर बैठ जाय।
- ☐ सव्य होकर आचमन करे नाक-कान छू ले।
- ☐ दोनों हाथ में दूसरी पैंती पहन लें। ☐ पूर्व की ओर मुखकर गायत्री या राम-राम जप ले।

।। ओम् देवताभ्यो पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ।।

हवन प्रारम्भ

- ☐ अपसव्य हो जाए ☐ अपने आगे मिट्टी की १ वेदी बनाए।
- ☐ १ कुशा की जड़ से वेदी पर तीन रेखा (लाइन) खींच दे।
(रेखा पश्चिम से पूरब के क्रम से तथा अपनी ओर से दक्षिण की ओर खींचना चाहिये)।
- ☐ रेखा खींचने का मन्त्र- ।। ओम् अपहता असुरा रक्षा ँ सिवेदिषदः ।।

नोट- वेदी १ हाथ या १ बीता लम्बी चार अंगुल चौड़ी दक्षिण की ओर ढालू बनानी चाहिए। इसी पर पिण्डदान होता है।

☐ रेखा करने के बाद कुशा को ईशान कोण में फेंक दें।

☐ एक पत्ता पर अग्नि लेकर वेदी पर घुमा दें। ☐ अग्नि घुमाने का मन्त्र-

।। ओम् ये रूपाणि प्रतिमुंचमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति।
परापुरो निपुरो ये भरन्ति अग्निष्टान् लोकान् प्रणुदात्यस्मात् ।।

☐ इस अग्नि को दक्षिण की ओर अलग रख दे। ☐ वेदी पर जल छिड़क दें।

।। ओम् अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैते मोक्ष दायिकाः ।।

☐ तीनों रेखा पर १-१ कुशा बिछा दें (कुश का जड़ अपनी ओर रहे)।

☐ सव्य होकर नाक-कान छू ले। गायत्री जप ले।

☐ अपसव्य हो जाय ☐ १ दोनिया में जल-तिल-फूल-चंदन भरकर दाहिने हाथ में ले। ☐ संकल्प करें:-

☐ दाहिने हाथ में ही दोनिया के नीचे मोटक-तिल-जल रख लें।

।। ओम् अद्य शुभपुण्यतिथौ गोत्रः नामाऽहम् अस्मिन् अपात्रक पार्वणश्राद्धे
अस्मत् पितृ-पितामह-प्रपितामहाः तथा च मातामह-प्रमातामह वृद्ध
प्रमातामहाः पिण्डस्थाने अत्र अवने निग्दध्वं तेभ्यः स्वधा ।।

☐ दोनिया का २-२ बूँद जल तीनों रेखा पर छोड़ दें।

नोट- कुछ लोग अलग-अलग ६ दोनिया लेकर पिता-बाबा-परबाबा, नाना-परनाना-वृद्ध परनाना को अलग-अलग अवनेजन संकल्प करते हैं।

☐ शेष जल सहित दोनिया अपनी दाहिनी ओर संभाल कर रख ले।

☐ बायाँ पैर मोड़ ले, दाहिना पैर उठा ले। पिण्डदान करे।

☐ दाहिने हाथ में मोटक ले ☐ क्रमशः १-१ पिंडा-जल-तिल लेता जाय ☐ संकल्प पढ़कर वेदी पर १-१ पिंडा रखता जाय। ☐ पिण्डदान संकल्प-

(१) अद्य अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् अस्मत् पितः अमुक नाम (पिता का नाम ले) पार्वण श्राद्धे एष पिण्डः ते स्वधा ।।

(२) अद्य अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् अस्मत् पितामह अमुक नाम पार्वण श्राद्धे एष पिण्डः ते स्वधा ।।

(३) अद्य अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् अस्मत् प्रपितामह अमुक नाम पार्वण श्राद्धे एष पिण्डः ते स्वधा ।।

(४) अद्य अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् अस्मत् मातः अमुकी देवि पार्वण श्राद्धे एष पिण्डः ते स्वधा ।।

(५) अद्य अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् अस्मत् पितामही अमुकी देवि पार्वण श्राद्धे एष पिण्डः ते स्वधा ।।

(६) अद्य अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् अस्मत् प्रपितामही अमुकी देवि पार्वण श्राद्धे एष पिण्डः ते स्वधा ।।

नोट- पद्धतिकारों ने केवल पिता-बाबा-परबाबा तथा नाना-परनाना-वृद्ध परनाना-केवल ६ को ही संकल्प लिखा है। कुछ पद्धतिकारों ने सपत्नीक लिखकर एक ही साथ माता-दादी-परदादी, नानी-परनानी-वृद्ध परनानी को पति के साथ पिण्डदान लिखा है। कुछ ने अलग-अलग पिण्डदान की बात लिखी है, देशाचार जानना। इस पद्धति में स्वदेशाचार के अनुसार १६ पिण्डदान का संकल्प लिखा जा रहा है, जो आवश्यक हो ग्रहण करें। शेष छोड़ दें। शास्त्रों में कोई प्रमाण ऐसा नहीं मिल सका है, सब कुछ लोकाचार पर स्थिर है।

(७) अद्य अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् अस्मत् मातामह (नाना) अमुक नाम पार्वण श्राद्धे एष पिण्डः ते स्वधा ।।

(८) अद्य अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् अस्मत् प्रमातामह (परनाना) अमुक नाम पार्वण श्राद्धे एष पिण्डः ते स्वधा ।।

(९) अद्य अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् अस्मत् वृद्ध प्रमातामह (वृद्धपरनाना) अमुक नाम पार्वण श्राद्धे एष पिण्डः ते स्वधा ।।

(१०) अद्य अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् अस्मत् मातामही (नानी) अमुकी देवि पार्वण श्राद्धे एष पिण्डः ते स्वधा ।।

(११) अद्य अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् अस्मत् प्रमातामही (परनानी) अमुकी देवि पार्वण श्राद्धे एष पिण्डः ते स्वधा ।।

(१२) अद्य अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् अस्मत् वृद्ध प्रमातामही (वृद्ध परनानी) अमुकी देवि पार्वण श्राद्धे एष पिण्डः ते स्वधा ।।

(१३) अद्य अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् पितृ पक्षे ये पितरः एष पिण्डः तेभ्यः स्वधा ।।

(१४) अद्य अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् मातृ पक्षे ये पितरः एष पिण्डः तेभ्यः स्वधा ।।

(१५) अद्य अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् अस्मत् हस्ताधिकारिणः ये पितरः एष पिण्डः तेभ्यः स्वधा ।।

(१६) अद्य अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् अस्मत् कुले ये पुत्रदार विवर्जिताः मृता एष पिण्डः तेभ्यः स्वधा ।।

टिप्पणी- कुछ लोग चाचा-चाची, मामा-मामी-बुआ आदि को पिण्ड दान करते हैं, जिसे देना हो, उनका नाम लेकर संकल्प की योजना कर लेनी चाहिये।

□ शेष खीर का १ पिण्डा ४ अंगुल लम्बा बना ले □ उसे दाहिने हाथ में ले ले। □ बाएँ हाथ में कुशा लेकर कुशा की जड़ से इस पिण्डा को काटकर तीन बार में पिण्डों पर गिरा दें।

□ मन्त्र पढ़े :- ।। ओम् लेपभागभुजस्तृप्यन्तु ।।

□ वेदी पर बिछे तीनों कुशा को छू ले।

□ सव्य हो जाय। □ नाक-कान छू ले। □ पूर्व की ओर मुख घुमाकर भगवान का ध्यान करे।

□ मन्त्र- ।। शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्।
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णम् शुभांगम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिरध्यान गम्यम्।
वन्दे विष्णुं भवभय हरं सर्वलोकैक नाथम् ।।

□ अपसव्य हो जाय। □ दक्षिण की ओर मुख कर ले।

□ बायीं ओर मुंह घुमाकर सांस को रोक कर पितरों का ध्यान करते हुए मुँह सीधाकर पिण्डों की ओर साँस छोड़ दे।

।। ओम् यत्र पितरो मादयध्वम् यथा भाग मा बृषायध्वम्।
अमीमदन्त पितरो यथा भाग मा बृषायिषत् ।।

□ दाहिने हाथ में मोटक-तिल-जल लें, □ अवनेजन वाली दोनिया (जिससे पिण्डदान के पहले संकल्प करके आधा जल वेदी पर चढ़ाया है। आधा जल बचाकर रखा है) उसी आधे जल सहित दोनियां को हाथ में ले ले।

☐ संकल्प करे-

।। ओम् अद्य अमुक गोत्र: अमुक नामाऽहम् अस्मत् पितृ-पितामह-प्रपितामहा: तथा च मातामह-प्रमातामह-वृद्ध प्रमातामहा: पितरश्च पार्वण श्राद्धे पिण्डेऽत्र प्रत्यवने निग्ध्वं तेभ्य: स्वधा ।।

☐ संकल्प करके दोनिया के शेष जल को पिण्डों पर चढ़ा दें।

☐ दोनिया अलग रख दे। ☐ मोटक सामने रख ले।

☐ पिण्डों पर कच्चा सूत चढ़ावे सूत चढ़ाने का मन्त्र-

।। ओम् नमो व: पितरो रसाय नमो: व: पितर: शोषाय नमो व: पितरो जीवाय नमो व: पितर:स्वधायै नमो व: पितरो घोराय नमो व: पितरो मन्यवे नमो व: पितर: पितरो नमो व: गृहान्न: पितरो दत्त सतो व: पितरो देष्म एतद् व: पितरो वास: ।।

☐ मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करे-

।। ओम् अद्य अमुक गोत्र: अमुक शर्माऽहम् अस्मत् पितृ-पितामह-प्रपितामहा:- मातामह-प्रमातामह-वृद्ध प्रमातामहा: पितर: पार्वण श्राद्धे पिण्डेषु एतत् ते वास: स्वधा ।।

☐ पिण्डों पर चन्दन-तिल-फूल-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी तथा धोती-लोटा-अँगौछा आदि चढ़ाकर पूजन करे।

☐ मोटक तिल जल लेकर संकल्प करे-

।। ओम् अद्य अमुक गोत्र: अमुक शर्माऽहम् अस्मत् पितृ-पितामह-प्रपितामहानाम्-मातामह-प्रमातामह-वृद्ध प्रमातामहानाम् पितृणाम् पार्वण श्राद्धे दत्तैतत्-अन्नपादादिकम् अक्षय मस्तु ।।

☐ सव्य हो जाय ☐ पिण्डों पर पूर्व की ओर धार कर तीन बार जल दे।

☐ जल देने का मन्त्र- ।। ओम् अघोरा: पितर: सन्तु ।।

☐ हाथ जोड़कर प्रार्थना करे-

।। ओम् गोत्रं नो वर्धन्ताम् दातारो नोऽभि वर्धन्ताम् वेदा: सन्तति रेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु ।। अन्नं च नो बहुभवेद् अतिथीन् च लभेमहि। याचितारश्च न: सन्तु मा च याचिष्म कंचन ।। एता: सत्या आशिष: सन्तु ।।

☐ अपसव्य हो जाय। ☐ पिण्डों के ऊपर कुशा का तीन टुकड़ा बिछा दे। ☐ दक्षिण की ओर धार कर कच्चा दूध चढ़ाये। मन्त्र पढ़े-

।। ओम् ऊर्जम् वहन्तीरमृतं घृतं पय: कीलालं परिश्रुतम् स्वधास्थ तर्पयत मे पितॄन् ।।

☐ झुक कर पिण्डों को सूँघ कर वेदी से उठाकर अग्नि में छोड़ दे।

नोट- (१) नैवेद्य के लिए, भोजन सामग्री जो ब्राह्मण को खिलाना हो, वह सभी चीजें चढ़ायी जाती हैं।
(२) कुछ जातियों में इस दिन कड़ाही में जो कुछ बनता है, उसे पिण्ड पर चढ़ाया जाता है।

- ☐ वेदी पर बिछे हुए कुशों को उठाकर अग्नि में छोड़ दे। ☐ सव्य हो जाय।
- ☐ वेदी पर कुशा से ९ और ४ लिखकर उसकी पूजा करे-

।। ओम् शंखाय नमः। चक्राय नमः। गदाधराय नमः ।। कहता रहे।

- ☐ जल, रोड़ी, चन्दन, अक्षत, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य, आचमन, पान, सुपारी, दक्षिणा चढ़ावे और हाथ जोड़कर भगवान की प्रार्थना करे-

।। ओम् अनादि निधनो देव शंक चक्र गदाधरः।
अव्यक्तः पुण्डरीकाक्षः सर्वपापहरो भव ।।

- ☐ विश्वेदेवा की दोनों दोनिया (जो अर्घजल देने के बाद विश्वेदेवा के पीछे रख दी गयी थी, उन्हें) उठा कर विश्वेदेवा के आगे फिर रख दें। उसमें जवा छोड़ दे।
- ☐ अपसव्य होकर पितरों की छहों दोनिया को सीधी कर दे । उसमें तिल छोड़ दे।
- ☐ धोती की टेंट में जो कुशा खोसा है, उसे निकाल कर अग्नि में फेंक दे या तेल का जो दीपक जल रहा है। उसी में जला दे।
- ☐ हाथ में जवा-फूल-जल लेकर दीपक को छींटा मार कर एक बार में बुझा दे।
- ☐ लोटा को हाथ से बजा कर विसर्जन करे--मन्त्र पढ़े :-

।। ओम् वाजे वाजे ऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः
अस्य मध्वः पिवत मादयध्वम् तृप्तायात पथिभिर्देवयानैः ।।

- ☐ सव्य होकर-दाहिने हाथ के अगूठे से अपना नाक-कान छू ले।

- ☐ कुशा-अक्षत-जल लेकर गौ, कुत्ता, कौआ के लिये भोजन सामग्री को छूकर संकल्प करे।

।। ओम् अद्य अमुक गोत्रः अमुक शर्माऽहम् अस्मद् पितृ-पितामह प्रपितामहानां मातामह-प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानां पितॄणां पार्वण श्राद्धे गौ श्वान काक नैमितिकानि इमानि आसादित भोजन वस्तूनि उत्सृजे ।।

- ☐ हाथ का जल अक्षत गो ग्रास पर छिड़क दे। तीन बार जल छोड़ दे। अक्षत लेकर गौ की प्रार्थना करे-

।। ओम् सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्य राशयः।
प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः ।।

- ☐ चावल गो ग्रास पर छोड़ दे।
- ☐ जनेऊ-अंगौछा माला की तरह गले में करके हाथ में जवा लेकर श्वान प्रार्थना-

।। ओम् श्वानौ द्वौ श्याम शवलौ वैवस्वत कुलोद्भवौ।
ताभ्याम्-अन्नं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ ।।

- ☐ कहकर जवा कुत्ते के ग्रास पर छोड़ दे।
- ☐ अपसव्य होकर हाथ में तिल लेकर कौआ की प्रार्थना करे।

।। ओम् काकोऽसि यमदूतोऽसि वायसोऽसि महाबलः।
सप्तजन्म कृतं पापं बलिं भक्षतु वायस ।।

- ☐ सव्य होकर-नाक-कान छूकर कुशा-चावल-जल लेकर ब्राह्मण को दक्षिणा संकल्प करे।

।। ओम् अद्य अमुक गोत्रः अमुक शर्माऽहम् अस्मद् पितृ-पितामह-प्रपितामहानाम् तथा च मातामह-प्रमातामह-वृद्ध प्रमातामहानाम् पितृणाम् एवं च विश्वेदेवा देवा नाम कृतैतत् पार्वणश्राद्धे इदं दक्षिणा द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय दातुम् उत्सृजे ।।

☐ कुछ लोग गोदान भी करते हैं, कुशा-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर संकल्प करे।

।। ओम् अद्य अमुक गोत्रः अमुक शर्माऽहम् अस्मद् पितृ-पितामह-प्रपितामहानाम् तथा च मातामह-प्रमातामह-वृद्ध प्रमातामहानाम् पितृणाम् पार्वणश्राद्धे इदं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं सांगता सहितं च गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यम् संप्रददे ।।

☐ हाथ में कुशा-चावल-जल लेकर ब्राह्मण भोजन संकल्प करे।

।। ओम् अद्य अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् अस्मद् पितृ-पितामह-प्रपितामहानां तथा च मातामह-प्रमातामह-वृद्ध प्रमातामहानां पितृणाम् पार्वण श्राद्ध परिपूर्णतावाप्तिकामः यथोपपन्नैः सोपकरणैः अन्नैः ब्राह्मणं भोजयिष्ये दक्षिणां च दास्यामि ।।

(१ से अधिक ब्राह्मण हों तो-"ब्राह्मणान् भोजयिष्ये" कहना चाहिये।)

☐ इसके बाद चावल लेकर प्रार्थना करें-

ओम् प्रमादात् कुर्वताम् कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद् विष्णोः सम्पूर्णम् स्यादिति श्रुतिः ।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञ क्रियादिषु।

न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ।।
सर्वपरिपूर्णकामः विष्णु स्मरेत्।
श्री विष्णुः, श्री विष्णुः, श्री विष्णुः ।।

☐ तपर्ण करे- इसके बाद प्रतिदिन की तरह तर्पण करना चाहिए (तर्पण विधि आगे देखें)।

☐ तर्पण के बाद गौग्रास-गौ, कुत्ता, कौआ को खिला दे। ☐ पिण्डों को गाय को खिला दें या नदी-तालाब में फेंक दे।

☐ पिण्ड स्थान पर जितना भी पत्ता, दोनिया, वेदी की मिट्टी, तेल का दिया, विकरा का पिण्डा वगैरह है, सब कुछ उठाकर किसी नदी या तालाब में फेंक देना चाहिए। कुशा जल में नहीं फेंके।

☐ ब्राह्मण का पांव धोकर उसे भोजन कराना चाहिये।

ब्राह्मण का पैर धोना मन्त्र-

।। ओम् नमो ब्रह्मण्य देवाय गो ब्राह्मण हिताय च।
जगत् हिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ।।

☐ भोजन के बाद--यजमान पूर्व की ओर मुँह कर खड़ा हो और ब्राह्मण के माथे में चन्दन या दही का तिलक अक्षत लगावे, तिलक लगाने का मन्त्र--

।। ओम् गन्धद्वारां दुराधर्षाम् नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।

- ☐ पान दक्षिणा दे।
- ☐ ब्राह्मण यजमान के माथे में तिलक करे--मन्त्राक्षत दे-

तिलक मन्त्र- ।। ओम् आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः।
तिलकं तु प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थ सिद्धये ।।

- ☐ मन्त्राक्षत देने का मन्त्र-- ।। ओम् मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ।।

- ☐ ब्राह्मण परिकमा-यजमान ब्राह्मण की परिकमा करे-मन्त्र :-

।। ओम् यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्तु प्रदक्षिणि पदे पदे ।।

- ☐ प्रदक्षिणा के बाद ब्राह्मण का पांव छूकर विदा करे और स्वयं परिवार के साथ बैठ कर भोजन करे।

यम पूजन - चावल की ढेरी यम के प्रतीक - यम स्त्रोत
ॐ यमाय नमः त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु,
पृथिव्याः स ᳪ स्पृशस्पाहि। अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि॥
ॐ यमाय नमः आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि, ततो नमस्कारं करोमि।
३२ पितृ आवाहन पूजन - ॐ विश्वेदेवास ऽआगत, शृणुता म ऽइम ᳪ हवम्। एदं
बर्हिर्निषीदत॥ ॐ विश्वेदेवाः शृणुतेम ᳪ हवं मे, ये अन्तरिक्षे य ऽउप द्यविष्ठ।
ये अग्निजिह्वा उत वा यजत्रा आसद्यास्मिन्बर्हिषि मादयध्वम्॥ ॐ पितृभ्यो नमः

प्रारम्भ - षट्कर्म के बाद संकल्प रक्षाविधान। यम एवं पितृ आवाहन
पूजन करके तर्पण तथा ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ पितृ यज्ञ एवं मनुष्य यज्ञ।

तर्पण विधि

- ☐ कुश-अक्षत-जल लेकर संकल्प करे--

।। अद्य आश्विनमासे शुभे कृष्ण पक्षे अमुक···तिथौ···वासरे···गोत्रः···नामाऽहम्···अस्मद् पितृ-पितामह-प्रपितामहानां सपत्नीकानां तथा च मातामह-प्रमातामह-वृद्ध प्रमातामहानां सपत्नीकानां तथा च समस्त पितृणाम् अक्षय तृप्ति पाप्त्यर्थम् स्वर्ग प्राप्ति निमित्तं च देवर्षि पितृ तर्पण महं करिष्ये ।।

- ☐ हाथ जोड़कर आवाहन करे-

ओम् ब्रह्मादयः सुराः सर्वे ऋषयः शौनकादयः।
आगच्छन्तु महाभागा ब्रह्माण्डोदर वर्तिनः ।
ब्रह्मादयो देवा आगच्छन्तु ग्रहणन्त्वेताञ्जलाञ्जलीन्।

- ☐ कुश-अक्षत-चंदन-पुष्प लेकर हाथ के अग्र भाग से देवताओं को जल दे। देव तर्पण

ओम् ब्रह्मा तृप्यताम्। ओम् विष्णुस्तृप्यताम्। ओम् रुद्रस्तृप्यताम्। ओम् प्रजापतिस्तृप्यताम्। ओम् देवास्तृप्यन्ताम्। ओम् छन्दांसि तृप्यन्ताम्। ओम् वेदास्तृप्यन्ताम्। ओम् ऋषयस्तृप्यंन् ताम्। ओम् पुराणाचार्यास्तृप्यं ताम्। ओम् गंधार्वास्तृप्यन्ताम्। ओम् इतराचार्यास्तृप्यन् ताम्। ओम् सवत्सरः
३३ सावयवः तृप्यन्ताम्। ओम् देव्यस्तृप्यन्ताम्। ओम् अप्सरसस्तृप्यन्ताम्। ओम् देवानुगास्तृप्यन्ताम्।

ओम् नागास्तृप्यन्ताम्। ओम् सागरास्तृप्यन्ताम्। ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम्। ॐ सरितस्तृप्यन्ताम्। ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम्। ओम् यक्षास्तृप्यन्ताम्। ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम्। ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्। ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्। ओम् भूतानि तृप्यन्ताम्। ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्। ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम्। ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम्। ओम् भूतग्राम चतुर्विधस्तृप्यन्ताम् ।।

□ जनेऊ-अंगौछा माला की तरह गले में करके □ मुख उत्तर की ओर घुमाकर □ कुश-जवा चंदन-पुष्प लेकर छोटी अंगुली के बगल हथेली के बीच से उत्तर की ओर दो-दो बार जल दे। मन्त्र-

।। ओम् कपिलादयश्च ये सर्वे ऋषयः सनकादयः।
आगच्छन्तु महाभागा ब्रह्माण्डोदर वर्तिनः।
सनकादयः सप्तमुनयः आगच्छन्तु गृह्णन्त्वेताञ्जलाञ्जलीन् ।।

।। ओम् सनकस्तृप्यताम्, सनकस्तृप्यताम्। ओम् सनन्दनस् तृप्यताम्, सनन्दनस् तृप्यताम्।
ओम् सनातनस्तृप्यताम्, सनातनस्तृप्यताम्। ओम् कपिलस्तृप्यताम्, कपिलस्तृप्यताम्।
ओम् आसुरिस्तृप्यताम्, आसुरिस्तृप्यताम्। ओम् वोढुस्तृप्यताम्, वोढुस्तृप्यताम्।
ओम् पंचशिखस्तृप्यताम्, पंचशिखस्तृप्यताम् ।।

□ पूरब की ओर मुँह करके सव्य होकर (बायें कांधे पर जनेऊ अँगौछा करके) कुशा-अक्षत-गन्ध-पुष्प लेकर हाथ के अग्र भाग से १-१ बार जल दे-मन्त्र-

।। ओम् मरीच्यादि दश ऋषयः आगच्छन्तु गृह्णन्त्वेताञ्जलाञ्जलीन्।

ओम् मरीचिस्तृप्यताम्। ओम् अत्रिस्तृप्यताम्। ओम् अंगिरास्तृप्यताम्, ओम् पुलस्त्यस्तृप्यताम्। ओम् पुलहस्तृप्यताम्। ओम् क्रतुस्तृप्यताम्। ओम् प्रचेतास्तृप्यताम्। ओम् वशिष्ठस्तृप्यताम्। ओम् भृगुस्तृप्यताम्। ओम् नारदस्तृप्यताम् ।।

□ अपसव्य होकर, (दाहिने कंधे पर जनेऊ-अँगौछा करके) बायें पैर का घुटना मोड़कर, मोटक-तिल-जल लेकर पहली अंगुली तथा अँगूठे के बीच से दक्षिण की ओर ३-३ बार जल दे।

ओम् कव्यवाडनलस्तृप्यताम्। इदं जलं सतिलं तस्मै स्वधा। तस्मै स्वधा। तस्मै स्वधा।

ओम् सोमस्तृप्यताम्। इदं जलं सतिलं तस्मै स्वधा। तस्मै स्वधा। तस्मै स्वधा।

ओम् यमस्तृप्यताम्। इदं जलं सतिलं तस्मै स्वधा। तस्मै स्वधा। तस्मै स्वधा।

ओम् अर्यमास्तृप्यताम्। इदं जलं सतिलं तस्मै स्वधा। तस्मै स्वधा। तस्मै स्वधा।

ओम् अग्निष्वात्तास्तृप्यन्ताम्। इदं जलं सतिलं तेभ्यः स्वधा। तेभ्यः स्वधा। तेभ्यः स्वधा।

ओम् सोमपाः पितरः तृप्यन्ताम्। इदं जलं सतिलं तेभ्यः स्वधा। तेभ्यः स्वधा। तेभ्यः स्वधा।

ओम् वर्हिषदस्तृप्यन्ताम्। इदं जलं सतिलं तेभ्यः स्वधा। तेभ्यः स्वधा। तेभ्यः स्वधा।

ओम् यमादि चतुर्दश देवा आगच्छन्तु ग्रह्णन्त्वेताञ्जलाञ्जलीन्।

ओम् यमाय नमः। यमाय नमः। यमाय नमः।

ओम् धर्मराजाय नमः। धर्मराजाय नमः। धर्मराजाय नमः।
ओम् मृत्यवे नमः। मृत्यवे नमः। मृत्यवे नमः।
ओम् अन्तकाय नमः। अन्तकाय नमः। अन्तकाय नमः।
ओम् वैवस्वताय नमः। वैवस्वताय नमः। वैवस्वताय नमः।
ओम् कालाय नमः। कालाय नमः। कालाय नमः।
ओम् सर्वभूतक्षयाय नमः। सर्वभूतक्षयाय नमः। सर्वभूतक्षयाय नमः।
ओम् औदुम्बराय नमः। औदुम्बराय नमः। औदुम्बराय नमः।
ओम् दध्नाय नमः। दध्नाय नमः। दध्नाय नमः।
ओम् नीलाय नमः। नीलाय नमः। नीलाय नमः।
ओम् परमेष्ठिने नमः। परमेष्ठिने नमः। परमेष्ठिने नमः।
ओम् वृकोदराय नमः। वृकोदराय नमः। वृकोदराय नमः।
ओम् चित्राय नमः। चित्राय नमः। चित्राय नमः।
ओम् चित्रगुप्ताय नमः। चित्रगुप्ताय नमः। चित्रगुप्ताय नमः।
ओम् आगच्छन्तु मे पितरः गृह्णन्त्वेताञ्जलाञ्जलीन् ।

मनुष्यपितृ तर्पण

अद्य...गोत्रः अस्मद् पिता वसुस्वरूपस्तृप्यताम् इदं जलं सतिलं तस्मै स्वधा। तस्मै स्वधा। तस्मै स्वधा।

अद्य...गोत्रः अस्मद् पितामह (बाबा) रुद्रस्वरूपस्तृप्यताम् इदं जलं सतिलं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा।

अद्य...गोत्रः अस्मद् प्रपिमामह (परबाबा) आदित्यस्वरूपस्तृप्यतामिदं जलं सतिलं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा।

अद्य...गोत्रः अस्मत् माता गायत्री स्वरूपा तृप्यतामिदं जलं सतिलं तस्यै स्वधा, तस्यै स्वधा, तस्यै स्वधा।

अद्य...गोत्रः अस्मद् पितामही (दादी) सावित्री स्वरूपा तृप्यतामिदं जलं सतिलं तस्यै स्वधा, तस्यै स्वधा, तस्यै स्वधा।

अद्य...गोत्रः अस्मद् प्रपितामही (परदादी) सरस्वती स्वरूपा तृप्यतामिदं जलं सतिलं तस्यै स्वधा, तस्यै स्वधा, तस्यै स्वधा।

अद्य...गोत्रः अस्मत् मातामह (नाना) तृप्यतामिदं जलं सतिलं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा।

अद्य...गोत्रः अस्मद् प्रमातामह (परनाना) तृप्यतामिदं जलं सतिलं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा।

अद्य...गोत्रः अस्मद् बृद्ध प्रमातामह (वृद्ध परनाना) तृप्यतामिदं जलं सतिलं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा।

अद्य...गोत्रः अस्मद् मातामही (नानी) तृप्यतामिदं जलं सतिलं तस्यै स्वधा, तस्यै स्वधा, तस्यै स्वधा।

अद्य...गोत्रः अस्मद् प्रमातामही (परनानी) तृप्यतामिदं जलं सतिलं तस्यै स्वधा, तस्यै स्वधा, तस्यै स्वधा।

अद्य...गोत्रः अस्मद् वृद्ध प्रमातामही (वृद्ध परनानी) तृप्यतामिदं जलं सतिलं तस्यै स्वधा, तस्यै स्वधा, तस्यै स्वधा।

- इसी तरह चाचा (पितृव्यः), मामा (मातुलः), भ्राता (भाई), बुआ (पितृस्वसा), बहन (स्वसा) आदि परिवार के मृत व्यक्तियों को ३-३ बार जल दे।
- निम्न मन्त्रों को पढ़ता हुआ जल दे--

ओम् आब्रह्मस्तम्ब पर्यन्तं देवर्षि पितृमानवाः। तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृ माता महादयः ।।
देवासुरास्तथा यक्षा नागा गन्धर्व राक्षसाः। पिशाचा गुह्यकाः सिद्धाः कूष्मांडास्तरवःखगाः ।।
जलेचरा भूनिलया वाय्वा धाराश्च जन्तवः। तृप्तिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुनाऽखिलाः ।।
नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः। तेषामाप्यायनायैतद् दीयते सलिलं मया ।।

ये बान्धवाऽबान्धवाश्चैव-अन्यजन्मनि बान्धवाः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मद्दत्ते नाम्बुनाऽखिला ।।
ये म कुले लुप्त पिण्डाः पुत्रदार विवर्जिताः। तेषां हि दत्तमक्षय्य मिदमस्तु तिलोदकम् ।।
अतीतकुल कोटीनां सप्तद्वीप निवासिनाम्। आब्रह्मभुवनाल् लोकादिदमस्तु तिलोदकम् ।।
येषा पिता न च भ्राता न पुत्रा नान्यगोत्रिणः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मयोत्सृष्टैः कुशोदकैः ।।

- हाथ का तिल-चन्दन पुष्प सब जल में गिरा दे,
- मोटक रखकर अंगौछा का एक कोना जल में भिगोकर निचोड़ दे। मन्त्र पढ़े-

।। ओम् ये चास्माकं कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।
ते पिबन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम् ।।

- सव्य होकर-दाहिने हाथ के अंगूठा से अपना नाक-कान छूकर पूरब की ओर मुँह करके भीष्म को तर्पण करे, जवा-कुशा लेकर ३ बार जल दे-मन्त्र

।। ओम् वैयाघ्रपदगोत्राय सांकृत्य प्रवरायच। अपुत्राय ददाम्येतत् जलं भीष्माय वर्मणे ।।

- गन्ध, अक्षत, पुष्प लेकर ३ बार सूर्य को अर्घ दे-मन्त्र

।। ओम् एहि सूर्य सहस्रांशो तेजो राशे जगत्पते। अनुकम्पय मां भक्त्यागृहाणार्घ्यम् दिवाकर ।।

□ जल को ३ बार चला दे-मन्त्र-

।। ओम यानि कानि च पापानि कर्त्तव्यानि शतानिच। तानि-तानि विनश्यन्तु प्रदक्षिण परिक्रमे ।।

□ हाथ जोड़ कर प्रार्थना--

ओम् अन्यथा शरण्यं नास्ति त्वमेव शरण्यम् मम। तस्मात् कारुण्य भावेन रक्ष-रक्ष परमेश्वर ।।

टिप्पणी - श्राद्ध के दिन वस्त्र निष्पीड़न (अंगौछा निचोड़ना) नहीं करना चाहिए।

Home

□□

आत्म निवेदन,

पूज्य पिताश्री स्वर्गीय पण्डित दीनबन्धु मिश्र की पुण्यस्मृति में प्रकाशित संस्कार विधियों के क्रम में यह पद्धति आपके सामने है।

विश्वास है, पुरोहितों-पण्डितों के लिए यह उपयोगी सिद्ध होगी।

निवेदन है, कहीं कोई त्रुटि या भूल अथवा संशोधन अपेक्षित है, तो सूचित करने की कृपा करेंगे।

श्रीधर शास्त्री
मंत्री, पण्डित परिषद् प्रयाग
बहादुरगंज, इलाहाबाद

Home

□